



कौटिल्य एकेडमी

www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II



हाल ही में चंद्रयान-3 ने चांद की सतह पर उतर कर इतिहास द्वय दिया है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतरने वाला भारत पहला देश बन गया है।

# चंद्रयान- 3 की सफलता के कौटिल्यपुर्वक



एक युगा इंजीनियर के छाप में सोमनाथ ने अपने दो वरिष्ठों के साथ धूवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी) में एक विसंगति को ठीक किया, जो उड़ान के लिए तैयार था। आम तौर पर ऐसी स्थिति में राकेट प्रक्षेपण स्थगित कर दिया जाता है।

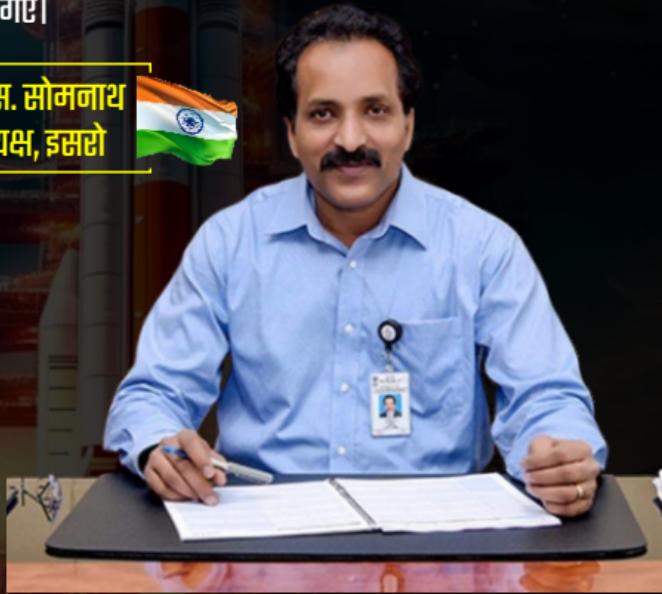
दूसरा विकल्प समस्या को ठीक करने का प्रयास करना था। वह भी तब जब राकेट में ईंधन भरा जा चुका था। यह एक जोखिम भरा काम है।

मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक किया। 1985 में सोमनाथ को इस्लाम में नौकरी मिल गई और वह तिट्टानंतपुरम में विक्रम साहाभाई अंतरिक्ष केंद्र (बीएसएससी) में शामिल हो गए।

**डा. एस. सोमनाथ  
अध्यक्ष, इस्लाम**



चंद्रयान-3 की  
सफलता के  
**रिलिप्कार**





राकेट का निर्माण किया।

नायर भाईत के राकेट संस्टर्ट विक्रम साहाभाई अंतरिक्ष केंद्र (वीएसएससी) के निदेशक होने के साथ-साथ एक मलयालम लघु कथाकाएँ भी हैं।

केरल विश्वविद्यालय से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक, भाईतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलुरु से एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में एमई और आइआइटी, मद्रास से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डाक्टरेट की प्राप्ति प्राप्त की है।

उन्नीकृष्णन ने 1985 में वीएसएससी से कठियर छुला किया।

डा. एस. उन्नीकृष्णन नायर  
निदेशक, विक्रम साहाभाई अंतरिक्ष केंद्र



चंद्रयान- 3 की  
सफलता के  
रिलिप्कार





चांद पर कई तद्दह की खोजों के लिए जाना गया।

तमिलनाडु के विल्लुपुरम ज़िले के रहने वाले, वीरमुथुवेल ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिलोमा पूछा किया और इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त की।

आइआइटी मद्रास से पीएचडी की। 2014 में इसारो में शामिल हुए।

डा. पी. वीरमुथुवेल

डा. पी. वीरमुथुवेल, परियोजना निदेशक



चंद्रयान- 3 की  
सफलता के  
रिलिप्कार





एम शंकरन यूआर साव सैटेलाइट सेंटर के प्रमुख हैं और उनकी दीम इस्यो के लिए भारत के सभी उपग्रहों को बनाने की जिम्मेदारी निभाती है।

•चंद्रयान-1, मंगलयान और चंद्रयान-2 सैटेलाइट के निर्माण में शंकरन शामिल रहे।

चंद्रयान तीन उपग्रह का तापमान अंतुलित रहे, इस बात को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी शंकरन की थी।

परमाणु में संचार, नेविगेशन, इमोट सोल्यूशंग, भौसम विज्ञान और अंतरग्रहीय अन्येषण जैसे क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के उपग्रहों के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहे हैं।

एम. शंकरन

निदेशक, यूआर साव सैटेलाइट सेंटर



चंद्रयान- 3  
सफलता के  
रिलिपकार





एम वनिता चंद्रयान-2 मिशन की परियोजना निदेशक थीं।

वह एक इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम इंजीनियर हैं।

वह चंद्र मिशन का नेतृत्व करने वाली भारत की पहली महिला बनीं। वी नारायणन क्रायोजेनिक इंजन के विशेषज्ञ हैं।

वर्तमान में संचार, नेविगेशन, एमोट सॉलिंग, औसत विज्ञान और अंतरग्रहीय अन्वेषण जैसे क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के उपग्रहों के क्षेत्र में नेतृत्व कर रहे हैं।

एम वनिता

जप निदेशक, यूआर एव लेटेलाइट सेंटर



चंद्रयान-3 की  
सफलता के  
दिल्लिकार



एस मोहन कुमार विक्रम साहाभाई स्पेस सेंटर के एक विशेष पैजानिक हैं और चंद्रयान-3 मिशन के डायरेक्टर हैं।

मोहन कुमार एनवीएम3-एम-3 मिशन के तहत वन वेब इंडिया 2 सेटलाइट के सफल व्यावसायिक लॉन्च में भी डायरेक्टर के तौर पर काम कर चुके हैं।

एम विजिता  
उपनिदेशक, यूआर साव सेटलाइट सेंटर



चंद्रयान-3  
सफलता के  
रिलिप्कार





# कौटिल्य एकेडमी

www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II

ए राजाशाजन सतीश धवन स्पेस सेंटर, श्रीहाट्कोटा के  
दायरेकर्त और वैज्ञानिक हैं।

मानव अंतरिक्ष मिशन प्रोग्राम - गगनयान और  
एसएसएलवी के मोटर को लेफट काम करते हैं।

ए राजाशाजन

ए राजाशाजन, लॉन्ज ऑथोइडजेशन बोर्ड के प्रमुख



चंद्रयान- 3 की  
सफलता के  
रिकॉर्ड





कल्पना के चंद्रयान-3 टीम का नेतृत्व किया। उन्होंने कोटोना महामासी के दौरान भी दृढ़ इच्छाशक्ति के सहारे साईं चुनौतियों का सामना करते हुए मिशन के काम को आगे बढ़ाया।

कल्पना ने चंद्रयान-2 और मंगलयान मिशन में भी मुख्य भूमिका निभाई है।

कल्पना के  
डिसी प्रोजेक्ट डायरेक्टर, चंद्रयान-3



चंद्रयान- 3  
सफलता के  
रिलिप्कार





कौटिल्य एकेडमी

www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II



# चांद पर देखा

एहुंपने वाले



तीन देशों  
ने ही चांद की सतह पर  
सोच प्रवाहने में  
कामयाबी पाई।



# चांद पर देता

पहुंचने वाले

## • ईंजर प्रोग्राम

- 1964 में मानव इहित मिशनों का उद्देश्य चंद्रमा की सतह की पहली क्लोज-अप तस्वीरों को प्राप्त करना था।

## • लांचिंग

- ईंजर 7 · जुलाई 1964
- ईंजर 8 · फटवटी, 1965
- ईंजर 9 · मार्च 1965

# अमेरिका

## सर्वेयर प्रोग्राम

यह नासा का एक प्रोग्राम था, जिसने जून 1966 से जनवटी 1968 तक चंद्रमा के सतह पर सात रोबोटिक अंतरिक्ष यान भेजे। इसका प्राथमिक लक्ष्य चंद्रमा पर साण्ट लैंडिंग करना था।

- सर्वेयर 1 · जून, 1966
- सर्वेयर 2 · सितंबर, 1966
- सर्वेयर 3 · अप्रैल, 1967
- सर्वेयर 4 · जुलाई, 1967
- सर्वेयर 5 · सितंबर, 1967
- सर्वेयर 6 · नवंबर, 1967
- सर्वेयर 7 · जून, 1968

- अपोलो 11 · जुलाई, 1969
- अपोलो 12 · नवंबर, 1969
- अपोलो 14 · फटवटी, 1971
- अपोलो 15 · अगस्त, 1971
- अपोलो 16 · अप्रैल, 1972
- अपोलो 17 · दिसंबर, 1972



# चांद पर देखा

एहुंगे गाले



## कौटिल्य एकेडमी

www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II

# चीन

चांग ई-3. चीन का पहला मून  
लैंडर था। जिसे चीन की अंतरिक्ष  
एजेंसी ने 1 दिसंबर 2013 को  
सफलतापूर्वक लांच किया था।





## ● लूना प्रोग्राम

1959 और 1976 के बीच सोवियत संघ द्वारा  
चंद्रमा पर भेजे गए सोबोट अंतरिक्ष यान  
मिशनों की एक शृंखला थी।

# सोवियत संघ

## चांद पर देखा पहुंचने वाले



### निलाई - 2024

- लूना 2 : सितंबर, 1959
- लूना 7 : अक्टूबर, 1965
- लूना 8 : दिसंबर, 1965
- लूना 9 : जनवरी, 1966
- लूना 13 : दिसंबर, 1966
- लूना 15 : जुलाई, 1969
- लूना 16 : सितंबर, 1970
- लूना 17 : नवंबर, 1970
- लूना 18 : सितंबर, 1971
- लूना 20 : फरवरी, 1972
- लूना 21 : जनवरी, 1973
- लूना 23 : अक्टूबर, 1974
- लूना 24 : अगस्त, 1976
- लूना 25 : अगस्त, 2023



# इंजिनियरिंग

## बोर्डरीट

- इंजिनियरिंग का पहला चंद्र अभियान था। चंद्रमा की सतह पर उतारने की कोशिश में यह फ़्रैंथ हो गया था। यह दुनिया का पहला निजी चंद्र अभियान था। 22 फरवरी, 2019 को इसे लांच किया गया था।





# चांद पर पहुंचने वाले देश

## ● चंद्रयान- 3

- 23 अगस्त 2023 को भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अपना यान उतारने वाला पहला देश बना भारत के अलावा किसी भी देश ने चंद्रमा के इस हिस्से पर लैडिंग नहीं की है।

# भारत

